

धू-धू जलती दुःख की ज्वाला, प्रभु त्रस्त निखिल जगतीतल है।
 बेचेत पड़े सब देही हैं, चलता फिर राग प्रभंजन है॥
 यह धूम घूमरी खा-खाकर, उड़ रहा गगन की गलियों में।
 अज्ञान-तमावृत चेतन ज्यों, चौरासी की रंग-रलियों में॥
 संदेश धूप का तात्त्विक प्रभु, तुम हुए ऊर्ध्वगामी जग से।
 प्रकटे दशांग प्रभुवर! तुम को, अन्तःदशांग की सौरभ से॥
 ॐ ह्रीं श्री सीमंधरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
 शुभ-अशुभ वृत्ति एकांत दुःख अत्यंत मलिन संयोगी है।
 अज्ञान विधाता है इनका, निश्चित चैतन्य विरोधी है॥
 काँटों-सी पैदा हो जाती, चैतन्य-सदन के आँगन में।
 चंचल छाया की माया-सी, घटती क्षण में बढ़ती क्षण में॥
 तेरी फल-पूजा का फल प्रभु! हों शांत शुभाशुभ ज्वालायें।
 मधुकल्प फलों-सी जीवन में, प्रभु! शांति-लतायें छा जायें॥
 ॐ ह्रीं श्री सीमंधरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।
 निर्मल जल-सा प्रभु निजस्वरूप, पहिचान उसी में लीन हुए।
 भव-ताप उतरने लगा तभी, चंदन-सी उठी हिलोर हिये॥
 अभिराम भवन प्रभु अक्षत का, सब शक्ति प्रसून लगे खिलने।
 क्षुत् तृषा अठारह दोष क्षीण, कैवल्य प्रदीप लगा जलने॥
 मिट चली चपलता योगों की, कर्मों के ईंधन ध्वस्त हुए।
 फल हुआ प्रभो! ऐसा मधुरिम, तुम धवल निरंजन स्वस्थ हुए॥
 ॐ ह्रीं श्री सीमंधरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

वैदेही हो देह में, अतः विदेही नाथ।
 सीमंधर निज सीम में, शाश्वत करो निवास॥१॥
 श्री जिन पूर्व विदेह में, विद्यमान अरहंत।
 वीतराग सर्वज्ञ श्री, सीमंधर भगवंत॥२॥